REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 8 | MAY - 2022

जसिंता केरकेट्टा का काव्यगत वैशिष्ट्य

प्रीति
पी-एच.डी. शोधार्थी,
विभाग- स्त्री अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा.

सारांश:

आधुनिक काल में आदिवासी विमर्श व चिंतन समाज एवं साहित्य के लिए चर्चा का महतवपूर्ण विषय बना हुआ है। सदा से आदिवासी समाज को एक पिछड़ा, बर्बर समाज माना जाता रहा है। उनके साथ दोयम दर्जे का व्यव्हार किया जाता रहा है। परन्तु बदलते परिस्थितियों के साथ शिक्षा के प्रसार के कारण आदिवासी समाज में जागृति आयी है। आदिवासियों के लिए साहित्य ने भी मोर्चा संभाल लिया है। आदिवासी साहित्यकार एवं गैरआदिवासी साहित्यकारों ने आदिवासियों के जीवन के लगभग सभी पर्दे खोल के रख दिए हैं। इनके दवारा निर्मित आदिवासी साहित्य आदिवासियों के प्रति समाज में प्रचलित समस्त भ्रांतियों का निवारण करता है। जसिंता केरकेट्टा उन्ही साहित्याकारो में से एक है। जिनकी लेखनी के शब्दों ने मुख्यधारा के समाज को जग्झोर के रख दिया है। जसिंता केरकेट्टा एक विशिष्ट आदिवासी साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

बीज शब्द: जसिंता केरकेट्टा, आदिवासी, स्त्री, प्रकृति, विस्थापन, नक्सलवाद, अस्मिता, अस्तित्व.

जसिंता केरकेट्टा:

जसिंता केरकेट्टा आदिवासी साहित्य की प्रमुख साहित्यकार आधुनिक कवयित्री है। आपका जन्म 3 अगस्त 1983 रांची झारखंड के पश्चिमी सिहभूम जिले के खुद्पोस गाँव में एक गरीब आदिवासी परिवार में हुआ है।हाट बाज़ार में इमली बेचकर परिवार का आर्थिक सहयोग देने के लिए उन्होंने अपनी लगन से पढ़ाई जारी रखी और लगातार कठिनाईओं का सामना किया। कालेज की पढ़ाई के लिए उनकी माँ ने जमीन गिरवी रख उन्हें पैसे दिए वह पढ़ाई के खर्च के लिए कई छोटे मोटे कार्य करती रही संघर्ष के इन्ही बिंबों में उन्होंने कविताएँ लिखना शुरू किया। जहाँ उनका व्यक्तित्व दु:ख समष्टिगत दु:ख में अभिव्यक्त होता हुआ आदिवासी समाज के विमर्श को आगे लेकर बढ़ा।

जसिंता केरकेट्टा की काव्य संवेदना के लिए कहा गया है जसिंता केरकेट्टा जसिंता केरकेट्टा की गहरी, अचेतन, अनकही भावनाओं को शव्दों और छवियो में पिरोने की जसिंता केरकेट्टा की कला अनूठी है। अपनी इस कला से वह इन भावनाओ को वास्तविकता का रूप देती हैं। रचनाकार और पत्रकार जसिंता केरकेट्टा झारखंड की पहली आदिवासी कवयित्री है उनकी पहली किताब 2016 में आदिवाणी प्रकाशन, कोलकाता से हिंदी अंग्रेजी में छपी। इसके बाद इस किताब को जर्मन के प्रकाशन द्रोपदी वेरलाग ने 'ग्लूट' नाम से इसे हिंदी जर्मन में प्रकाशित किया। इस किताब की बढती लोकप्रियता को देखते हुए प्रकाशन ने इसे दोबार छापा। इसके बाद भारतीय ज्ञान पीठ ने जर्मन प्रकाशन द्रोपदी वेरलाग और हाईडलबर्ग के साथ मिलकर उनके काव्यसंग्रह 'जड़ोकी जमीन' को हिंदी-अंग्रेजी और हिंदी-जर्मन में एक साथ प्रकाशित किया। उनसे पहले झारखंड की किसी भी कवि की कविताओं को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक साथ तीन भाषाओं में कभी प्रकाशित नहीं किया गया था। उनके द्वारा लिखित तीन कविता संग्रहों का प्रकाशन हो चूका है वे हैं; '**ईश्वर और बाज़ार**' '**जड़ो की जमीन**',

‘**अंगोरा**’। इसके साथ ही उन्हें काफोस्कारी युनिवेर्सिटी, मिलान युनिवेर्सिटी, तुरिनो यूनिवर्सिटी, ज्यूरिख युनिवेर्सिटी जैसे कई मंचो से कविता पाठ के लिए आमंत्रण प्राप्त हुए है। जहाँ उन्होंने अपनी कविताओं पर संवाद किया है।जसिंता केरकेट्टा को इटली के तुरीनो शहर में आयोजित 31वे इंटरनेशनल बुक फेयर में भी विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर उनके कविता संग्रह ‘अंगोरा’ के इतालवी अनुवाद ‘ब्राचे’ का लोकार्पण भी हुआ। जिसे इटली के मिराजी प्रकाशन ने छापा है। उन्हें कई राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय

सम्मानों से पुरस्कृत किया गया है। जिसमें विशंकर उपाध्याय स्मृति युवा कविता पुरस्कार, झारखंड इंडिजिनयस पीपुल्स फोरम, एआईपीपी थाईलैंड काइंडी इंडिजिनयस वायस ऑफ़ एशिया का रेकॉग्निशन अवार्ड, छोटा नागपुर सांस्कृतिक संघ का प्रेरणा सम्मान शामिल है।

जसिंता केरकेट्टा की कविताओं में दो मूल स्वर पाए जाते है।पहला **आदिवासी सम्बन्धी समस्याएं**, दुसरा **स्त्रीवादी स्वर।**
उनकी कविताओ में व्यक्त आदिवासी समस्याओं पर विचार करे तो;

भारतीय समाज, जहाँ कई सभ्याताएं आयी व प्राचीन समय से लेकर अब तक कई व्यवस्थाएं परिवर्तित हो चुकी हैं। इस बीच भारतीय समाज में राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थर पर कई परिवर्तन हो चुके हैं। इस बीच मनुष्य कई जातियों एवं वर्गों में बंटा जहाँ मनुष्य द्वारा ही दुसरे मनुष्य का शोषण हुआ दलित पिछडो को सहने के लिए कई यातनाएं और पीड़ा मिली ही।इसवर्ग का एक बहुत बड़ा हिस्सा जंगलों में गुजर बसर कर रहा है। ये समाज भारत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जंगलों में रहने वाला यही तबका आदिवासी कहलाया आदिवासी अर्थात जनजाति जनजाती शब्द अंग्रेजी भषा के ट्राईब का हिंदी रूपान्तरण है। विश्व के अनेक भागों में जनजातियाँ पायीं जाती हैं। भारतीय जनजातियों में संथाल, मीणा, भील, नागा, गाड़े, थार, खस प्रमुख जनजातियाँ हैं प्रस्तुत कवयित्री जसिंता केरकेट्टा झारखंड की उरा आदिवासी समुदाय से सम्बन्ध रखती हैं। भारत में आदिवासी समाज के अधिकांश लोग जंगलों में जीवन व्यतीत करते हैं। जिनका रहन सहन प्राकृतिक है। जिसके लिए जल, जंगल और जमीन उनकी पहचान है। आदिवासी समाज के लिए जल, जंगल और जमीन का प्रश्न वास्तव में उनकी अस्मिता का प्रश्न है। जसिंता केरकेट्टा की कविताओं में इस समस्या की प्रतिध्वनी स्पष्ट रूप से सुनी जा सकती है। मुख्य धारा के समाज के लिए भले ही ये समस्याएं न्यून प्रतीत होती हो परन्तु आदिवासी समाजइस हेतु सदा से युद्धरत है। कई बार इनकी लड़ाई को नजर अंदाज किया जाता है। परन्तु **‘मेरे हाथों के हथियार’** शीर्षक कविता में जसिंता केरकेट्टा लिखती हैं;

“लोगों को बस ये लड़ाई लगती हो
नहीं दिखता
मेरा सदियों पूराना दर्द
नहीं दिखता
मेरा सदियों पुराना जख्म
नहीं दिखते
सदियों से दूसरों द्वारा
लूटते-खसोटते वक्त
मेरी देह पार गड गए
जहरीले नाखूनों के दाग
उन्हें तो दिखते हैं
सिर्फ मेरी जमीन जंगल और
मेरे हाथों के हथियार”

अपनी जड़ों को बर्बाद होते देख कर कवयित्री की लेखनी से स्वतः निसृत होता है;

“वे पेड़ों को बर्दाश्त नहीं करते
क्योकि उनकी जड़ें जमीन मांगती हैं”

यहाँ पेड़ों के माध्यम से वे आदिवासी समाज की जमीन की समस्याओं की ओर इंगित करती हैंजसिंता का यह व्यंग है कि ये मुख्य धारा का समाज पेड़ों को काटता है क्योकि उसे पेड़ों के द्वारा अधिग्रहित जमीन भी बर्दाश्त नहीं अतः आदिवासियों के द्वारा जल, जंगल और जमीन का प्रयोग उन्हें कैसे ग्राह्य हो सकता है? हाल ही में देश में लगातार होने वाली प्राकृतिक आपदाएं इस ओर स्पष्ट संकेत कर रही हैं कि वह अब हमारी स्वार्थपूर्ति के बोझ कोऔर अधिक सहन नहीं कर सकती सदियों से प्रकृति की गोद में रहने वाला आदिवासी समाज ने प्राकृतिक संसाधनों का सीमित प्रयोग किया है। उनके संरक्षण पर बल दिया है। आज हम आदिवासी समाज से जीवन के शाश्वत मूल्यों को सिखने के स्थान पर आज आधुनिक विकास का दानव इनकी सभ्यता का ही भक्षण कर लेना चाहता है। जसिंता **'सभ्यताओं की मरने की बारी'** शीर्षक कविता में लिखती हैं;

"एक दिन जब सारी नदियाँ
मर जाएँगी ओक्सिज़न की कमी से
तब मरी हुई नदियों में तैरती मिलेंगी
सभ्यताओं की लाशें भी
नदियाँ ही जानती हैं
उनके मरने के बाद आती है
सभ्यताओं के मरने की बारी"

काव्य पन्तियों के माध्यम से आदिवासी समाज की कवयित्री यह चेतावनी देती नजर आती हैं कि यदि अब भी मनुष्य प्रकृति के दोहन से बाज नहीं आया तो एक दिन पूरी मानव सभ्यता का नाश तय है जल का उत्स है नदी परन्तु यह नदी ना केवल आदिवासी समाज के लिए ही आवश्यक है। अपितु सम्पूर्ण मानव समाज के लिए जीवन रक्षक है जिसका संरक्षण अत्यंत आवश्यक है

आदिवासी समाज के लिए पर्यावरण संकट उसकी पहचान के लिए संकट बन कर उभर रहा है आदिवासी समाज जिस जंगल, पहाड़ और जमीन पर रहता है। वह उसका अपना घर और परिवार है उसे अपने इस घर से बाहरी लोगों का अतिक्रमण झेलने के लिए मजबूर होना पड रहा है। उसके समक्ष इससे सम्बंधित आती चुनौतियां उसके अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह खड़ा कर रही हैं जसिंता के काव्य में उजड़ते वन्य परिवेश का चित्रण देखा जा सकता है मुख्यधारा के समाज ने उसके जंगलों में अनाधिकार प्रवेश कर उसका क्या हाल कर दिया है इस व्यक्त करती हुई कवयित्री कहती हैं;

"क्या क्या लेना है? पूछने लगा दुकानदार
भैया! थोड़ी बारिश, थोड़ी गीली मिट्टी
एक बोतल नदी, वो डिब्बा बंद पहाड़
उधर दीवार पर टंगी एक प्रकृति भी दे दो
और ये बारिश इतनी महँगी क्यों?"

किसने सोचा था। एक दिन इश्वर के द्वारा निर्मित एवं अगाध रूप से उपलब्ध इन प्राकृतिक पदार्थों को भी मनुष्य को खरीदना पड़ेगा उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में कवयित्री इस वास्तविकता से परिचय करना चाहती हैं की अब वह दिन दूर नहीं जब हमें बारिश, गीली मिट्टी और पहाड़ों के लिए तरसना पड़ेगा नदियों का जल तो खैर अब बंद बोतलों में बिकने ही लगा है परन्तु हम मानव सभ्यता की स्थिति इससे अधिक बिगड़ने से पहले आवश्यक कदम उठाने पड़ेंगे।

आदिवासी समाज प्रकृति को लेकर अत्यधिक सचेत है। क्योकि वह उसका घर है। इसकी रक्षा के लिए वे सदा सामने आते हैं। खेद की बात है कि मुख्यधारा का समाज दिन पर दिन जंगलों में अतिक्रमण करता जा रहा है जिसके कारण आदिवासियों को उनके घर से बेघर होना पड रहा है। चर्चित लेखक एवं चिन्तक हरिराम मीणा अपने लेख 'विकास की प्रक्रिया, विस्थापन और आदिवासी समाज' में लिखते हैं – "वैश्वीकरण से लाभान्वित होने वाली श्रेणियों में आदिवासी समाज कहीं नही टिकता वह कहीं है तो नुकसान के खाते में ही शामिल दिखाई देता है। बांध परियोजना, राष्ट्रीय उच्च मार्ग, रेलवे लाइन, खनन व्यवसाय, औद्योगिकीकरण, अभ्यारण्य एवं अन्य कारणों से आदिवासियों का अनिवार्य विस्थापन होता है। तो एक तरफ से उन्हें अपनी पारंपरिक जमीन व परिवेश से खदेड़ने को विवश किया जाता है इसकी वजह से उनकी जीविका के आधार भी समाप्त होते हैं। प्रश्न उठता है कि उनके जीविकोपार्जन के विकल्प तलाश किए जाने का"

जसिंता के काव्य में इस विस्थापन की समस्या को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है **'मेरी हाथों के हथियार'** शीर्षक कविता में विस्थापन के खिलाफ लड़ते लड़ाई का दृश्य खींचती हुई कवयित्री लिखती हैं;

"माँ ने बस इतना कहा
हम लड़ रहे हैं
अपनी जमीन और
अपना वजूद बचाने के लिए
मेरे बाद तुम्हे भी लड़ना होगा'

शहरीकरण की प्रक्रिया के चलते शहरवालों ने तो आदिवासियों के समक्ष विस्थापन की विरत समस्या को खड़ा कर दिया है। परन्तु यदि यही समस्या उनके साथ हो तो क्या? जसिंता **'ओ शहर'** कविता में इसी प्रश्न को खड़ा करती हैं;

"भागते हुए छोड़ कर अपना घर
पूआल, मिट्टी और खपरे
पूछते हैं अक्सर
ओ शहर!
क्या तुम कभी उजड़ते हो

किसी विकास के नाम पर?"जसिंता अपनी कविता में उन सभी को कठघरे में खड़ा करती हैं जिनके कारण आदिवासियों को आज अपने घर से बेघर होना पड रहा है। शहर की अमानवीयता को दिखाते हुए **'शहर की नाक्'** कविता में वे शहर के बारे में लिखती हैं;

"इसलिए इसका पहल पाठ वही है
रुपयों के बिना
इस शहर में
आदमी को पाना मुश्किल है'

ऐसा नहीं है की इन शहरातियों को इनके कर्मो का फल नहीं भुगतना पड़ता है अपितु जिस प्रकार इन्होने अन्धाधुन पेड़ों की कटाई की है। उसके करण उन्हें जीवन में कई विकत समस्याओं का तो सामना करना ही पड़ता हैपरन्तु **'सपाट सड़क पर'** कविता में जसिंता ने समाज की चुटकी ली है;

"चलाती गाड़ी से उतर जब
सड़क पर पेशाब करते हैं पुरुष
ढूढती है स्त्रियाँ
कहीं कोई पेड़
कोई झाड़ी की ओट
सपाट सड़क पर"

जंगल पर आश्रित आदिवासियों ने उससे जीवनदाता की तरह प्यार किया है। बाहरी लोगों व् सरकारी निति नियांताओं और ठेकेदारों के चलते ही जंगल कट कट कर और सिमट कर रह गया है इसमें आदिवासियों का कोई दोष नहीं है। कंपनियों को लीज पर जमीन दे दी जाती है। आने वाले कानूनी अड़ंगे को हटा दिया जाता है इस समय बहुत सारे कीमती जंगल का उपयोग ना होने के कारण नक्सलवादियों से मुक्त करने के लिए आदिवासी क्षेत्र में फौजी कार्यवाही चल रही है जब की आदिवासी हितों को लगातार अनदेखा किया

जा रहा है। कई बार पुलिस आदिवासियों को ही नक्सलवादियों के रूप में कैद करती है फिर उनका शोषण प्रारम्भ हो जाता है। जिसका कोई अंत नहीं होता। अनपढ़ आदिवासी कानून के चंगुल से भी खुद को बचाने में असमर्थ होते हैं।जसिंता **'साहेब! कैसे करोगे ख़ारिज?'** कवितामे लिखती हैं;

"मेरा पालतू कुत्ता
सिर्फ इसीलिए मारा गया
क्योकि खतरा देख वह भौका था
मारने से पहले उन्होंने
उसे घोषित किया पागल
और मुझे नक्सल-
जनहित में"

निरीह आदिवासियों को माओवादी बनाने की प्रक्रिया को काव्य का विषय बताते हुए कवयित्री **'पहाड़ और पहरेदार'** कविता में लिखती हैं;

"कई दिनों से भूखे खोजी कुत्ते की तरह
पहाड़ पर अकेली घूमती स्त्री को देख कर लार टपकाते हैं
स्त्रियों को मांस का लौंधा समझने को अभिशप्त
ये जंगल की स्त्रियों के मांस पर टूट पड़ते हैं
और भोर उठ कर पेड़ से शलप उतारने जा रहे
उनके प्रेमियों को गोली मार देते हैं
ये शहर लौट कर गर्व से चिल्लाते हैं
देखो, जंगल से हम माओवादी मार कर आते हैं"

आदिवासी समाज इस प्रकार की समस्यायों से स्वयं की रक्षा करने में इसीलिए असमर्थ है क्योकि उनके समाज में शिक्षा,स्वास्थ्य और रोजगार जैसी मूलभूत आवश्यकताओं का आभाव है।जसिंता कहीं न कहीं सरकार को इस ओर मजबूत कदम उठाने का सन्देश भी अपने काव्यों में देती नजर आतीं हैं अन्यथा पूरे भारत के लिए सामाजिक न्यायिक संकल्पना अधूरी ही रहेगी।आदिवासी समाज की सामाजिक स्थिति का चित्रण कर जसिंता ने उनकी समस्याओं को सबके समक्ष अपनी**'प्रार्थना का समय'** कविता के माध्यम से व्यक्त करती हुई लिखती हैं;

"हमें बताया गया है लम्बे समय से
गरीबी, भूखमरी और बीमारी
ईश्वर पर यकीन न करने का परिणाम है
हमने पूछा
इस भीड़ में क्यों
सिर्फ मुट्ठी भर लोगो के पेट में
अच्छी फसल का
अच्छा हिस्सा फँसा रहता है?"

जसिंता न केवल अपनी समाज के लिए मुखर हैं अपितु समस्त किसानों की समस्याओं का भी चित्रण करती हैं **'सड़क पार किसान'** कविता में लिखती हैं;

"कभी सोचा है तुमने
कहाँ से ये अनाज आता है
क्या ये देश सिर्फ धुप खता है?
हर एक चीज का दम वसूलने वालों
तुम्हारी भूख की कीमत कौन चुकाता है?"

जसिंता आगे अपनी कविता के माध्यम से यह बताती नजर आती हैं कि किसान ही वह व्यक्ति है जिसको इसकी कीमत चुकानी पड़ती है। जो अन्नदाता है। वही भूखा मरने के लिए विवश है। जबकि दुसरे लाखों की सूट पहन कर घूम रहे हैं:

"क्यों अन्नादत सड़क पर दम तोड़ेंगे
गाँव से निकल कर वे
तुम्हारे शहर को घेरेंगे
तुम्हारे बदन पर लाखों का सूट
उनके लिए नहीं
पानी का एक घुट"

जसिंता हमें अपनी इस कविता के अंत में ये चेतावनी देती हुई जाती हैं। कि;

"मूर्तियाँ गिराते गिराते
गिर गएँ हैं। जो अपने भीतर
हूजुम किसानों का फिर से
उन्हें सवालों के चौराहे पर खड़ा करेगा"

आदिवासियों की समस्याओं का चित्रण करते हुए जसिंता समाज की अन्य समस्याओं को अपनी कविताओं में व्यक्त करने से कभी पीछे नहीं हटी है। उनकी कविताओं में जहाँ एक ओर किसान की बात की जा रही है वही समाज के कुत्सित रंगभेद की समस्या को भी वे अपने काव्य का विषय बनती हुई **'सपाट सड़क पर'** कविता

"यहाँ काले आदमी का
कालापन पाप बताया जाता है
उद्धार चाहने वालों के हाथों ही
सदियों से सताया जाता है"

रंगभेद से ग्रस्त समाज पर व्यंग करते हुए वे स्त्रियों को माध्यम बनाके लिखती हैं

"वह सब कुछ सपाट करने के खिलाफ
लडती हैं कुछ इस तरह
की जब आदमी कोशिश करता है
एक रंग को हर बार करना जिन्दा करने कि
पानी फेरती हुई स्त्रियाँ धरती पर
करती हैं कई रंगों वाले बच्चो को पैदा"

स्त्रीवादी साहित्य को देखा जाए तो वह जाति के प्रश्नों को नहीं समझता वह तो सिर्फ स्त्रियों के हकों और अधिकारों को लेकर चर्चा करता है। जसिंता केरकेट्टा के कविताओं को देखते और पढ़ने पार ज्ञात होता है कि आदिवासी साहित्य में स्त्री ने अपनी बड़ी तादाद में उपस्थिति दर्शायी है। जसिंता केरकेट्टा की कविताओं में उन्होंने अपने समाज की प्रताड़ित महिलाओं की आत्माओं की चीख़हाड़ों जंगलों और घाटियों में गूँजती मदद के लिए की गयी पूकार को वाणी प्रदान की है। जहाँ स्त्रियाँ अपनी स्थिति को सुधारने के लिए एक लम्बी लड़ाई लड़ रही हैं। वही आदिवासी समाज में स्त्री पुरुष सहभागित और समान अधिकार उनके स्वस्थ मानवीय मूल्यों और गरिमा को प्रकट करते हैं मुख्यधारा का समाज जब-जब उनके जीवन में प्रवेश करता है। तब-तब आदिवासी स्त्रियाँ भी मुख्यधारा की स्त्रियों की तरह शारीरिक मानसिक शोषण का शिकार होती हैं। जसिंता 'साहेब! कैसे करोगे ख़ारिज?' कविता में लिखती हैं कि कैसे जो नेता मंत्री और तथाकथित समाज के ठेकेदार मंच पर खड़े होकर आदिवासी और स्त्री हक़ की बात करते हैं। वही मंच से उतरने पर अपने चहरे का मुखौटा उतार फेकते हैं। उनकी वहशी आंखे आदिवासी स्त्री को खाने के लिए दौड़ती नजर आती हैं

"तुमने छिपा कर रखा है
तुम्हारी घिनौनी भाषा
मंच से तुम्हारे उतरने के बाद
इशारों में जो बोली जाती हैं
तुम्हारी वह सच्चाईयाँ
तुम्हे लगता है जो समय के साथ
बदल जाएगी किसी भ्रम में
साहेब!"

जसिंता अपनी इसी कविता में अपनी जाति पर हो रहे अत्याचार को प्रकट करती हुई लिखती हैं

"एक दिन
जंगल की कोई लड़की
कर देगी तुम्हारी व्याख्याओं को
अपने सच से नंगा
लिख देगी अपनी कविता में
कैसे तुम्हारे जंगल के रखवालों ने

तलाशी के नाम पर
खींचे उसके कपडे
कैसे दरवाजे तोड़कर
घुस आती हैं
तुम्हारी फौजे उनके घरों में'

शासन प्रशासन का यही घिनौना चेहरा जसिंता के काव्य की भाव भूमि बना है।
जसिंता शहरों में हो रहे स्त्री शोषण का भी पर्दाफास करती हैं वे **'शहर की नाक'** शीर्षक कविता में लिखती हैं;

"झुण्ड में या फिर अकेले
रह चलती लड़कियों की गंध
और टूट पड़ता है एक साथ

जैसे कुत्तों के झुण्ड को
दिख गया हो
कोई मांस का टुकड़ा
यह पहचान लेता है

कन्या भ्रूण की गंध स्त्री समस्या को लेकर मुखर आदिवासी कवयित्री मानव मात्र के लिए चुन्तित नजर आती हैं

आदिवासी संघर्ष का इतिहास लेख में प्रसिद्ध आदिवासी चिन्तक केदार प्रसाद मीणा इस महत्वपूर्ण रूप में रेखांकित करते हैं "आदिवासी इतिहास की एक विशेषता ये है कि इनके विद्रोह में उनकी महिलाओं ने भी सक्रिय भूमिका निभाई है आदिवासी शंघर्ष में पुरुषों के साथ साथ स्त्रीयों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है आदिवासी स्त्रियों ने पहले से अपने हाथ और अधिकारों के लिए पुरुषों के साथ मिल कर समाज और शासकों का सामना किया है। समय समय पर उसने अपने हाथों में हथियार भी उठा लिए हैं जसिंता केरकेट्टा ने अपनी कविताओं द्वारा स्त्री अस्मिता के प्रश्नों को उठाती हैं उनकी कविता में आदिवासी स्त्री अपनी पीड़ा का प्रतिरोध करते हुए हाथों में हथियार उठा कर अपनी अगली पीढ़ी को अपने हक़ के लिए लड़ने हेतु प्रशिक्षित करती है

" अँधेरे और उजाले की चौखट पर
खड़ा उसका इन्तेजार करता रहा
तब भी जाने क्यों माँ नहीं आई
वर्षों बाद जाना मैंने
लेकर वह तीर कमान
घर लौटने के लिए तो
निकली नहीं थी"

यह आदिवासी समाज में स्त्रियों की शैली का सफल चित्रण है। जहाँ पुत्र अपनी माता की लड़ाई की सराहना करता है आदिवासी स्त्रियों की इस लड़ाई को हमें नहीं भूलना चाहिए आदिवासी स्त्री के मातृत्व ह्रदय में ना केवल मनुष्यों के लिए प्रेम और वात्सल्य भाव है अपितु पेड़ पौधों के लिए भी उसके ममतामयी ह्रदय में अगाध स्नेह और संरक्षण का भाव है तभी तो जसिंता की कविता 'माँ' में जब बच्चा पूछता है कि सिर्फ एक बोझा लकड़ी के लिए क्यों माँ दिन भर जंगल छानती है पहाड़ लांघती है,और देर शाम लौटती है तब माँ का प्रतिउत्तर होता है;

"जंगल छानती,
पहाड़ लांघती
दिन भर भटकती हूँ
सिर्फ सूखी लकड़ियों के लिए
कहीं काट न दूं कोई जिन्दा पेड़'

जसिंता की कविताओं में ध्वनित ये सभी समस्याएँ आदिवासियों के अस्मिता और अस्तित्व के सवाल से जुडी हैंइससे हमें ज्ञात होता है कि किस प्रकार आदिवासी समाज शोषित हो रहा है। उन्हें हाशियों की जिंदगी जीने पर मजबूर किया जा रहा है। मुख्यधारा का समाज आदिवासी समाज के हितों को सदा नजर अंदाज करता रहा है आदिवासी समाज विपत्तियों और जीवन जीने की मूलभूत आवश्यकताओं से विहीन अमानवीय और त्रासदीपूर्ण जीवन जीने के लिए मजबूर हैं आदिवासियों का उद्गम उसकी पहचान को पुष्ट करता है। जो उसकी विरासत, भाषा, शिक्षा, संस्कृति और जीवन शैली की पहचान को जिन्दा रखता है। इनकी रक्षा किए बिना उनकी अस्मित्ता और अस्तित्व की रक्षा नहीं हो सकती आदिवासी समाज आज अपनी उपर्युक्त सभी आधारों से रक्षा में तत्पर है इस क्रम में वह अपनी मातृभाषा के अस्तित्व को लेकर चिंतित है **राज्यसभा टीवी के गुफ्तगू कार्यक्रम** में दिए गए अपने साक्षात्कार में जसिंता कहती हैं कि"मुझे तो ऐसा लगता है कि हमें अपनी मातृभाषा की ओर जाना है सीखना है; क्योकि आपकी मातृभाषा से आपके सोचने-समझने का नजरिया बनता है। इसको सिखने

से आप अपनी संस्कृति की विशिष्टताओं को अन्य भाषाओं तक पंहुचा सकते हैं एक प्रमुख आदिवासी कवयित्री के रूप में जसिंता इस मातृभाषा की समस्याओं को लेकर **'मातृभाषा की मौत'** कविता में लिखती हैं;

"माँ के मुँह में ही
मातृभाषा को कैद कर दिया गया
और बच्चे
उसकी रिहाई की मांग करते-करते
बड़े हो गए
मातृभाषा खुद नहीं मरी थी
उसे मारा गया था"

जसिंता केरकेट्टा की कविताओं के भाव पक्ष पर विचार करने पार ज्ञात होता है कि इनकी कविताओं में नवजागरण की भांति स्त्री चेतना से युक्त आदिवासी समाज के आक्रोश एवं अस्तित्व साकार के स्वर सुनाई देते हैं उनकी कविताओं की भावभूमि एक ओर आदिवासी समस्याओं को लेकर चलती हैं तो दूसरी ओर स्त्रियों की अनुभूतियों को भी व्यक्त करती हैं उनकी कविताएँ आदिवासी अंतर्मन की प्रतिध्वनी हैं। उनकी कविताओं के शिल्प पक्ष पर विचार करने से ज्ञात होता है उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से अनुभूतियों को व्यक्त करने के लिए भाषा के सभी बन्धनों को तोडा है। जसिंता की भाषा प्रयोग सरल व् सहज है परन्तु उसकी काव्यात्मकता पाठक को बंधने में तनिक भी पीछे नहीं हटती आम बोल चाल की भाषा में काव्य रचना करने के कारण जसिंता की कविताए सर्ववर्ग पठनीय बन गयी हैं। जहाँ एक ओर वे मुक्तछंद में रचना करती हैं तो वही दूसरी ओर हिंदी के साथसाथ कुडक जो उनकी मातृभाषा है, अंग्रेजी, देशी और तत्सम-तद्भव शब्दों के प्रयोग से पीछे नहीं हटती उनकी कविताओं को देखने पर ऐसा लगता है कि कवयित्री जैसे स्वयं से वार्तालाप कर रही हैं। वही दूसरी ओर समाज के समक्ष अपने भावों का उद्गार कर परिवर्तन का विगुल बजा रही हैं वे स्वयं कहती हैं कि अपनी कविताओं में वे अपनी मातृभाषा कुड़क के शब्दों का प्रयोग करती हैं जिसका ज्वलंत उदहारण अंगोर का प्रयोग है यह एक अहिन्दी भाषी शब्द है। साथ ही हूल का प्रयोग भी इसी प्रक्रिया के अन्दर किया गया है। कुडक में जिस प्रकार महिलाएं स्त्री तथा पुरुष दोनों ही स्वरों में बातें करती हैं उसी प्रकार कवयित्री अपनी कविताओं में कभी स्त्री तो कभी पुरुष पत्र के द्वारा अपनी अनुभूतियों को अभिव्यक्त करती हैं

निष्कर्ष:

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि जसिंता केरकेट्टा की कविताएँ न केवल आधुनिक आदिवासी समाज का प्रतिनिधित्व करती हैं बल्कि मुख्यधारा के समाज के सामने मशाल लेकर मार्गदर्शक की भूमिका का निर्वहन करती है इनकी कविताओं का भाव एवं शिल्प पक्ष बेजोड़ है। भावना और भाषा का सामंजस्य उन्हें विशिष्ट स्थान प्रदान करता है एक कवयित्री के रूप में स्त्री हृदय के उद्गार उनके काव्य की मुख्य ध्वनि रही है। आदिवासी समाज और स्त्री के साथ हो रहा शोषण जसिंता केरकेट्टा के लिए सोचनीय विषय है जिसकी अभिव्यक्ति उन्होंने अपनी कविताओं में सफल रूप से की हैं जसिंता केरकेट्टा झारखंड की पहली आदिवासी कवयित्री होने का सौभाग्य प्राप्त क्यों न हुआ हो परन्तु उसके साथ ही अपने आदिवासी समाज का उद्धार करने का उत्तरदायित्व भी उनके कंधो पर है। उनके काव्यगत वैशिष्ट्य को देखने के उपरांत यह कहने में कोई अत्युक्ति प्रतीत नहीं होती कि जसिंता केरकेट्टा आदिवासी कवयित्री होने के बावजूद आधुनिक मुख्यधारा के साहित्य में प्रमुखस्थान रखती हैं।

संदर्भ:

- अमीन, ख.प . (2016). *आदिवासी साहित्य.* नई दिल्ली .श्री नटराज प्रकाशन :
- उषा कीर्ति रावत, स.प . (2012). *आदिवासी केन्द्रित हिंदी साहित्य.* नई दिल्ली .हिदी बुक सेंटर :
- केरकेट्टा, ज. (2016). *अंगोरा.* जर्मन.ज़र्मन प्रकाशन :
- केरकेट्टा, ज. (2018). *जड़ो की जमीन.* नई दिल्ली.भारतीय ज्ञान पीठ दिल्ली से प्रकाशित :

- गुप्ता, र. (2018). *आदिवासी समाज से विस्थापन.* नई दिल्ली.राधाकृष्णन प्रकाशन :
- टेटे, व. (2016). *आदिवासी दर्शन और साहित्य.* नई दिल्ली .अनन्या प्रकाशन :
- मीणा, ग.स . (2014). *आदिवासी साहित्य.* नई दिल्ली.अनामिका पब्लिशर एंड डिस्ट्रीब्यूटरस लिमिटेड:
- विशाल वर्मा, द.क . (2015). *आदिवासी साहित्य एवं संस्कृति* नई दिल्ली .स्वराज प्रकाशन :

बेवसाईट:

- https://www.jankipul.com/2020/03/some-poems-of-jacinta-kerketta.html
- https://www.hindwi.org/poets/jacinta-kerketta/all
- https://youtu.be/0ysx3uIHjDQ
- https://youtu.be/4gIAAE6DgVw
- https://youtu.be/TsIW7S0UNlg